जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

अजमेर

Rashtradoot

फोनः- 2627612, 2427249 फैक्सः- 0145-2624665 वर्षः 27 संख्याः 22 प्रभात अजमेर, रविवार 21 अगस्त, 2022 आर.जे./ए.जे./73/2015-2017 पृष्ठ 8 मूल्य 2.00 रु.

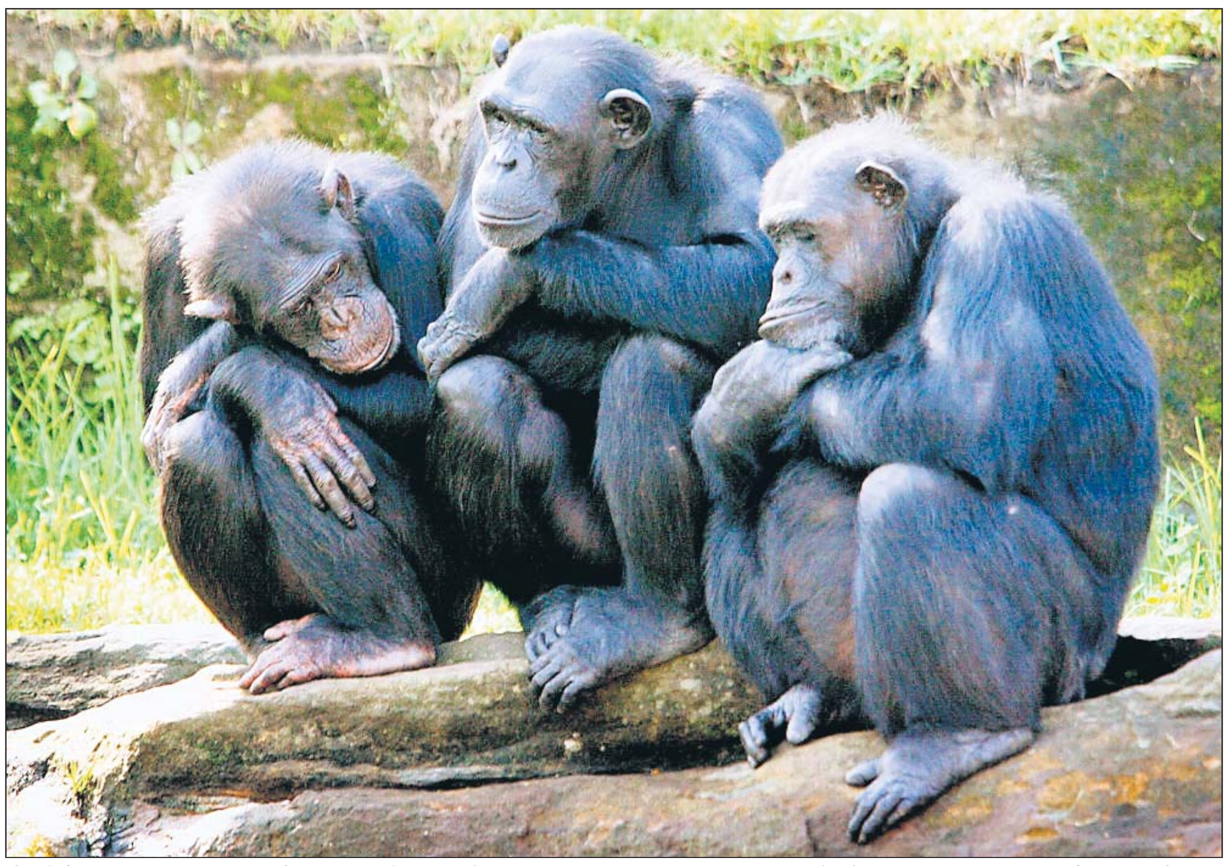

चिम्पैंज़ी आश्चर्यजनक रुप से होशियार होते हैं। इन्हें औजारों के साथ काम करते हुए देखा गया है और ये अलग-अलग प्रकार की आवाज़ निकाल कर संवाद भी करते हैं। युवा चिम्पैंज़ी अधिकतर अपने बड़ों से सोशल लर्निंग के जरिए संवाद करना और औजारों का उपयोग करना सीखते हैं। हाल ही में शोधकर्ताओं ने वाइल्ड ईस्ट अफ्रीकन चिम्पैंज़ी के एक समूह को कुएं खोदते हुए देखा। उन्होंने पाया कि समूह के सदस्यों ने यह सब एक अन्य समूह से आए प्रवासी चिम्पैंज़ी को देखकर सीखा था। जर्नल प्राइमेट्स में छपी इस चौंकाने वाली रिसर्च में बताया गया है कि, ऑनयोफी नाम की युवा मादा चिम्पैंज़ी वर्ष 2015 में ''वायबीरा'' समूह में आई थी। कुछ ही समय बाद शोधकर्ताओं ने उसे कुंआ खोदते हुए देखा। वैज्ञानिकों ने सोचा कि वायबीरा समूह में आने से पहले वह अवश्य ही कुंआ खोदने वाले चिम्पौंज़ी समूह में रहती होगी। ओनयोफी को कुंआ खोदते देखकर उस समूह के अन्य चिम्पौंज़ी, युवा एवं पूर्ण वयस्क, की भी इस व्यवहार में रुचि जगी। ताकतवर नरों ने जब उसे कुआं खोदते हुए और उससे पानी पीते हुए देखा तो बाद में उन्होंने भी उस कुएं से पानी पिया। फिर तो वायबीरा समूह की अन्य मादा चिम्पौंज़ी भी ऑनयोफी की तरह कुआं खोदने लगीं। किसी भी नर को कुआं खोदते हुए नहीं देखा गया। कुआं खोदने की यह प्रवृत्ति पहले शुष्क भागों में ही देखी जाती थी और शोधकर्ताओं को पहले से ही सवाना के तीन ऐसे चिम्पैंज़ी समूहों के बारे में जानकारी थी जो कुआं खोदते थे। शोधकर्ता हैला पीटर ने एक बयान में कहा, ''हमने वायबीरा में जो देखा है वह सवाना में रहने वाले चिम्पैंज़ी समूहों से भिन्न है। पहला तो यह कि वायबीरा वर्षा वन है, और यह माना जाता है कि यहां पानी प्राप्त करना मुश्किल नहीं होना चाहिए। लेकिन ऐसा लगता है कि हर वर्ष कुछ महीनों में जब गर्मी पड़ती है तब संभवतया पानी हासिल करना मुश्किल हो जाता है। एक रोचक बात यह भी है कि वायबीरा में चिम्पौंज़ी ने जो कुंए खोदे हैं वे सब खुले जल स्रोतों के आस-पास हैं, इसका अर्थ है कि कुएं खोदने का आशय सिर्फ पानी हासिल करना नहीं बल्कि साफ पानी हासिल करना है।'' पीटर ने कहा, चिंपैंज़ी को यह पता होना कि कुंए से साफ और अलग स्वाद का पानी मिल सकता है, बहुत ही दिलचस्प पहलू है। इससे साबित होता है कि वर्षा वनों में भी पानी की उपयोगिता कितनी ज्यादा है और इससे यह भी पता चलता है बदलती जलवायु से चिम्पैंज़ी व्यवहारात्मक अनुकूलन कर सकते हैं। अगर बारिश कम हो तो वो कुआं खोद सकते हैं।

राहुल गांधी ने कांग्रेस अध्यक्ष के लिये गहलोत का नाम प्रस्तावित किया

सोनिया गांधी को दिये गये प्रस्ताव में राहुल गांधी ने प्रियंका गांधी व स्वयं को कांग्रेस अध्यक्ष बनने की संभावना से दूर रखा

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 अगस्त। उच्चपदस्थ सूत्रों का कहना है कि राहुल गांधी ने कांग्रेस पार्टी के अगले अध्यक्ष के लिये अशोक गहलोत के नाम का सुझाव दिया है। उन्होंने यह सुझाव अपनी माँ सोनिया गांधी को दिया है क्योंकि उन्होंने पार्टी अध्यक्ष पद के लिये अपनी तथा अपनी बहिन प्रियंका गांधी की सम्भावनाएं खारिज कर दी हैं।

सूत्रों का कहना है कि कांग्रेस की अध्यक्षता का मुद्दा पूरी तरह खुला हुआ है। इस परिदृश्य में, या तो सोनिया गांधी स्वयं को पूर्ण कांग्रेस अध्यक्ष घोषित करें या परिवार से बाहर के किसी व्यक्ति को इस पद पर लायें। एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि लगता तो यही है कि उनकी दिली इच्छा पार्टी को किसी गैर-गांधी को सौंपने की तो नहीं है।

कल 21 अगस्त है, जिस दिन कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव की प्रक्रिया शुरु होनी है लेकिन अभी तक, इससे सम्बंधित किसी प्रकार समयबद्ध कार्यक्रम की घोषणा नहीं हुई है तथा

- **इस प्रस्ताव के बाद सोनिया गांधी के समक्ष दो ही विकल्प हैं या तो स्वयं पुनः पूर्णकालीन अध्यक्ष बनें या किसी गैर गांधी परिवार के नेता को अध्यक्ष पद संभलायें।**
- **राहुल गांधी ने यह प्रस्ताव सोनिया गांधी को जुलाई के अंत में दिया था।**
- **पर, इस प्रस्ताव पर आगे कोई कार्यवाही न होने का मतलब है कि, सोनिया गांधी राहुल के प्रस्ताव से सहमत नहीं और अभी भी राहुल गांधी को ही पार्टी अध्यक्ष के रूप में देखने के लिये कृत संकल्प हैं।**
- **21 अगस्त से कांग्रेस अध्यक्ष पद के चुनाव की प्रक्रिया शुरू होने की घोषणा हुई थी, परन्तु इस दिशा में भी कोई हरकत नज़र नहीं आ रही तथा यह संभावना भी मजबूत होती नज़र आ रही है कि, कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव का कार्यक्रम आगे खिसका दिया जाये।**

ऐसी कोई गतिविधि भी नजर नहीं आ रही कि चुनाव से सम्बंधित किसी प्रकार की कोई कार्यवाही होने जा रही है।

ऐसी संभावना है कि अनिश्चितता तथा किंकर्तव्यविमूढ़ता के इस वातावरण में, कांग्रेस अध्यक्ष पद का चुनाव आगे खिसक सकता है। पार्टी ने ''भारत जोड़ो यात्रा'' की तिथि भी पहले खिसकाकर 7 सितम्बर कर दी है। इस दिन राहुल गांधी यात्रा को झंडी दिखाकर रवाना करने के लिये कन्याकुमारी में होंगे तथा वे इस यात्रा में शामिल भी होंगे।

लेकिन प्रश्न यह है कि राहुल वहाँ किस हैसियत से जा रहे हैं तथा वे अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी लिये बिना, इस पद के अधिकारों का प्रयोग कब तक करते रहेंगे। वे कुछ समय से ऐसा ही करते आ रहे हैं तथा इसे देखकर लगता है कि कोई बदलाव होने वाला नहीं है।

सूत्रों का कहना है कि राहुल ऐसा मानते हैं कि गहलोत एक वरिष्ठ नेता हैं तथा वे बहुत अनुभवी हैं तथा वे कांग्रेस अध्यक्ष की जिम्मेदारी को संभाल लेंगे। समझा जाता है कि राहुल ने सोनिया गांधी के समक्ष गहलोत का नाम जुलाई के अंत में ही प्रस्तावित कर दिया था, लेकिन चूंकि इस दिशा में आगे कोई भी हलचल नहीं हुई है, इसलिये इस बात की काफी संभावना है कि सोनिया गांधी राहुल के सुझाव से सहमत नहीं हुई है क्योंकि इस बात पूरी तरह अड़ी हुई हैं कि राहुल ही पार्टी की बागडोर संभालें। अगर गहलोत कांग्रेस अध्यक्ष बना दिये जाते हैं तो यह साफ है कि राजस्थान में नये मुख्यमंत्री के लिये मैदान खाली हो जायेगा, क्योंकि राज्य विधानसभा के चुनावों में लगभग एक वर्ष ही शेष है।

स्टैण्ड अप कमीडियन पर राजनीति छिड़ी कर्नाटक व तेलंगाना में

बैंगलोर में इस कमीडियन, मुन्नवर फारूकी का ''शो'' रद्द करवाया पुलिस ने, भाजपा की शिकायत पर

-लक्ष्मण वैंकेट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 अगस्त। कर्नाटक और तेलंगाना में एक साल से भी कम समय के अन्दर विधानसभा चुनाव होने हैं तथा इन दोनों ही राज्यों में विचारधारा कानून व्यवस्था तन्त्र को निम्न दिशा में ले जाती प्रतीत हो रही हैं।

दोनों ही राज्य स्टैंड-अप कॉमेडियन मुनव्वर फारूक़ी को बुलाने वाले थे। ज्ञातव्य है कि फारूक़ी इससे पहले कई अवसरों पर सत्ता पर कटाक्ष कर चुके हैं तथा कुछ समय के लिये जेल भी जा चुके हैं।

अब, बेंगलुरू के दक्षिणपंथी संगठनों तथा भाजपा ने उनके आगमन को लेकर उपद्रव शुरू कर दिया तथा उनका शो रद्द किये जाने की माँग की। और ये संगठन कामयाब भी रहे।

- **हैदराबाद (तेलंगाना) में फारूकी के ''शो'' को अनुमति ही नहीं दी, बल्कि स्थानीय भाजपा विधायक टी. राजा सिंह व उनके समर्थकों को हिरासत में ले लिया, फारूकी के ''शो'' से पहले, शांति भंग करने की आशंका में।**
- **विधायक व उनके समर्थकों को हिरासत में लेने से भाजपा ज्यादा दुखी नहीं है, क्योंकि इस कृत्य के बाद तेलंगाना सरकार पर ''हिन्दु विरोधी'' का तमगा आसानी से फिट किया जा सकता है तथा हिन्दू व गैर हिन्दुओं के बीच चुनाव जिताने वाला ध्रुवीकरण और भी आसान हो जाता है।**

लेकिन इसी प्रकार का एक और शो इसी व्यक्ति द्वारा बेंगलुरू में किया जाना था किन्तु बेंगलुरू प्रशासन तथा पुलिस का विचार, हैदराबाद प्रशासन के विचार से ठीक उलटा था।

ऐसा लगा कि बेंगलुरू में प्रशासन इस बात का इन्तजार कर रहा था कि कोई व्यक्ति इसकी शिकायत करे। आखिर, एक अल्पज्ञात दक्षिण पंथी संगठन 'जय श्री राम सेना संगठन' आगे आया तथा उसने कहा कि स्टैंड-अप कॉमेडियन मुनव्वर फारूक़ी द्वारा किये जाने वाले शो ''डोंगरी दु नोवेयर'' से हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को आघात लगेगा। पुलिस ने शुक्रवार को होने वाले इस शो को आनन-फानन में रद्द कर दिया।

पिछले साल नवम्बर में भी, बेंगलुरू में फारूक़ी का एक शो इसी प्रकार रद्द कर दिया गया था।

लेकिन तेलंगाना की राजधानी, हैदराबाद में, दक्षिणपंथी, संगठनों तथा भाजपा कार्यकर्ता, शो के स्थान पर आग लगा देने की धमकी दे रहे थे, वहां एक अलग सोच उभरी। पुलिस तुरन्त हरकत में आ गई। तेलंगाना, जहाँ तेलंगाना राष्ट्र समिति, जिसने अभी हाल ही में क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा को चुनौती दे रखी है, की सत्ता है। इसलिये तेलंगाना राष्ट्र समिति ने इस आयोजन का समर्थन कर दिया तथा पुलिस ने भी आयोजन

(शेष पृष्ठ 5 पर)

ई.डी. भी शामिल

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 अगस्त। सी.बी.आई. ने एन्फोर्समैन्ट डायरैक्टोरेट (ई.डी.) से कहा है कि वह निजी कारोबारियों को शराब व्यवसाय की छूट देने वाली दिल्ली सरकार की आबकारी नीति में किए गए कथित भ्रष्टाचार में मनी लॉंड्रिंग के आरोपों की जांच करे।

- **दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के खिलाफ चल रही शराब नीति घोटाला जांच में ई.डी. भी शामिल हो गई है।**

सी.बी.आई. के एक अधिकारी ने बताया कि इस केस में एजेंसी ने जो एफ.आई.आर. दर्ज की थी, उसे उसने ई.डी. के साथ पहले ही साझा कर लिया है। उन्होंने बताया कि सी.बी.आई. ने कुछ आरोपियों को भी तलब किया हैं,

(शेष पृष्ठ 5 पर)

'भाजपा केजरीवाल में मोदी के खिलाफ सशक्त उम्मीदवार देखती है'

सिसोदिया ने प्रेस कॉन्फ्रैंस में इसी लय में कहा, ''एक्साइज़ नीति'' तो बहाना है, केन्द्र ने केजरीवाल सरकार की छवि खराब करने के लिये सिसोदिया के ठिकानों पर सी.बी.आई. के छापे मारे हैं

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 अगस्त। अब यह प्रामाणिक है कि वर्ष 2024 के लोकसभा चुनावों का महासंघर्ष नरेन्द्र मोदी और अरविन्द केजरीवाल के बीच होगा। भारतीय मतदाता पिछले संसदीय चुनावों में बड़ा बहुमत जुटाने वाली मोदी-शाह की शक्तिशाली जोड़ी के खिलाफ पिछले एक लम्बे समय से किसी चतुर और विश्वसनीय उम्मीदवार की प्रतीक्षा में थे।

उनकी प्रतीक्षा अब समाप्त हो गई लगती है। दिल्ली के उपमुख्यमंत्री तथा शिक्षा एवं आबकारी मंत्री मनीष सिसोदिया, जो कि कथित शराब लायसैंस घोटाले को लेकर चर्चा का केन्द्र बने हुए हैं, ने अपने राजनीतिक गुरू एवं मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल के पक्ष में अन्ततः आवाज उठाई है।

- **सिसोदिया ने यह भी कहा कि, कुछ समय पूर्व आप सरकार के स्वास्थ्य मंत्री सत्येन्द्र जैन के ठिकानों पर ''रेड'' करके उन्हें गिरफ्तार किया है, अब शीघ्र ही वे भी गिरफ्तार किये जायेंगे।**
- **भाजपा ने पलटवार करते हुए कहा, नयी एक्साइज़ पॉलिसी जारी करने के बाद, जब दिल्ली पुलिस की इकोनॉमिक ऑफैंस विंग ने जांच शुरू की, तो सिसोदिया ने एक्साइज़ पॉलिसी वापस ले ली। क्या यह कृत्य चोर की दाढ़ी में तिनके का मामला नहीं है।**

जुझारू सिसोदिया, जिन पर आबकारी नीति में खामियों को लेकर भ्रष्टाचार के आरोपों में सी.बी.आई. ने छापा मारा था, ने शनिवार को मीडिया से बात करते हुए स्थिति को तुलनात्मक रूप से सही करने की कोशिश की। भाजपा द्वारा उन पर लगाए गए भ्रष्टाचार के आरोपों को लेकर उन्होंने घोषणा की कि यह एक ढोंग के अलावा कुछ नहीं है। उन्होंने कहा कि ''भ्रष्टाचार बिल्कुल कोई मुद्दा नहीं था। इस पूरी कवायद का उद्देश्य कोविड-19 की वैश्विक महामारी के

(शेष पृष्ठ 5 पर)

'भद्र व्यवहार'

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 अगस्त। सैन्ट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वैस्टिगेशन ने दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया का मोबाइल फोन, लैपटॉप और आबकारी नीति से सम्बंधित फाइलें जब्त कर लीं

- **दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने सी. बी. आई. का धन्यवाद किया कि रेड के दौरान सी. बी.आई. अफसरों ने उनके परिवार के साथ भद्र व्यवहार किया।**

जिसे 30 जुलाई को रद्द कर दिया गया था। सी.बी.आई. ने शुक्रवार को 14 घंटे तक सिसोदिया के आवास पर तलाशी ली। शुक्रवार को सुबह स्पेशल सी.बी.आई. जज एम.के. नागपालन ने राउस स्वेन्यु कोर्ट में एक्साइज़ पॉलिसी घोटाले में सर्च वॉरंट जारी किया था। वॉरंट 17 अगस्त को दर्ज एफ.आई.

(शेष पृष्ठ 5 पर)

आज राजीव गांधी अठहत्तर वर्षीय वृद्ध जरूर होते, पर चेहरे पर संतुष्टि होती (1)

एक उत्साही युवा की भांति ही उन्होंने प्र.मंत्री बनने के बाद कहा था, ''मुझे भी सपना देखने का अधिकार हैः भारत के भविष्य का सपना''

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 अगस्त। अगर राजीव गांधी जीवित होते, वे आज कुछ बुर्जुग दिखाई देते। वे 78 साल के हो गये होते। लेकिन वे सदा-सर्वदा के लिये युवा ही बने रहेंगे, एक ऐसे युवा, जिन्होंने एक बार कहा था कि उन्हें सपने देखने का, खासतौर से भारत के बारे में सपने देखने का अधिकार हैं।

राजीव गांधी अनिच्छापूर्वक बने राजनेता थे। उन्हें उनकी माँ इन्दिरा गांधी राजनीति में लाई थीं। और जब उनसे पूछा गया कि कोलकाता के ए.आई.सी.सी. अधिवेशन में उनके इस नये ''महासचिव'' का प्रदर्शन कैसा रहा, तो वे बहुत नाराज हो गई थीं।

शाम के समय, प्रैस के साथ चल रही अनौपचारिक बातचीत के दौरान, एक पत्रकार द्वारा पूछ लिये गये इस प्रश्न को तत्कालीन प्रधानमंत्री ने व्यक्तिगत अपमान के रूप में ले लिया था। राजीव गांधी चन्द रोज पहले ही कांग्रेस पार्टी में महासचिव के रूप में शामिल किये गये थे, और ईमानदारी की बात तो यह है कि तब उनके प्रदर्शन के बारे में लिखने जैसा कुछ भी नहीं था।

राजीव गांधी उस दिन सुबह के समय एक विशाल सभा में अपना पहला भाषण दे रहे थे। जब वे मंच से बोल रहे थे, तो एक तमाशा जैसा लग रहा था- आँकड़े और सूचनाएँ आपस में गड्डमड्ड हो रही थी। प्रणव मुखर्जी, जो उहें सहजता से बोलने में सहायता करने के लिये उनकी बगल में बैठे थे, उन्हें प्रोत्साहित करते जा रहे थे।

- **जो कुछ नन्हे-नन्हे कदम उन्होंने उठाये थे, टेलिकॉम, एयर लाइंस के क्षेत्र में, वे ही आधार बने भारत के आई.टी. सैक्टर की सफलता के।**
- **टेलीकॉम में सैम पित्रोदा का अनुभव व एक्सपरटीज़ काम आयी। राजीव गांधी के इण्डियन एयर लाइंस के पायलट के रूप में अनुभव ने इस सैक्टर को ''लिब्रलाइज़'' करने व आधुनिकता की ताजी बयार लाने व प्रसार करने में उपयोगी साबित हुए।**

लेकिन ऐसा होना ही नहीं था। प्रणव मुखर्जी आँकड़ों एवं विस्तृत विवरण के मामले में एक दम पक्के थे। और राजीव गांधी इसके ठीक विपरीत। आँकड़ों और तथ्यों पर उनकी कोई पकड़ नहीं थी। तथा सच तो यह है कि उन शुरूआती दिनों में, उन्हें इस बात की ज्यादा जानकारी भी नहीं थी कि अर्थव्यवस्था किस तरह चलती हैं।

लेकिन राजीव गांधी की सबसे बड़ी और खास बात उनका आकर्षण था। पूरा दिन गुजर जाने के बाद, शाम तक उनकी एक मद्र एंव शिष्ट व्यक्ति की छवि उभर कर आ चुकी थी, और उनके बारे में हर व्यक्ति की प्रतिक्रिया इसी प्रकार की थी। उनकी सोच एवं उद्देश्य अच्छे थे तथा भारत के भविष्य को लेकर उनकी सोच एवं स्वप्न आधुनिक था।

अगर भारत को प्रधानमंत्री के रूप में राजीव गांधी का 1984 से 1989 तक का छोटा सा कार्यालय नसीब नहीं हुआ होता, तो आज भारत की स्थिति बिल्कुल भिन्न होती। उन्होंने सैम पित्रोदा को अनेक टेक्नॉलजी-मिशनों का प्रमुख बनाया। इनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण मिशन था-टेलीकॉम मिशन।

सैम पित्रोदा टेलीकॉम-विशेषज्ञ थे तथा उन्होंने, उस समय की शब्दावली में, ''सी डॉट'' कहा जाता था। इसके जरिये ग्रामीण क्षेत्रों के लिये कुछ विशेष टेलीकॉम एक्सचेंज तथा व्यापक टेलीकॉम नैटवर्क विकसित हुआ। इसके अलावा, ऐसे अनेक कदम उठाये गये, जिनके द्वारा भारत की टेलीकॉम की रीढ़ में गुणात्मक परिवर्तन आया।

उसी समय में टैलीकॉम नैटवर्क्स को प्राइवेट सैक्टर्स के लिए धीरे-धीरे खोलने की शुरूआत हुई। इस एकमात्र कदम में टैलीकॉम सर्विस प्रावधान पर से सरकार का शिंकजा समाप्त करके उसे उदार बना दिया और देश में होने वाली आई.टी. क्रांति की नींव रख दी।

कुल मिलाकर, भरोसेपंद एवं

(शेष पृष्ठ 5 पर)

डॉक्टरों को ''फ्रीबीज़''

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 अगस्त। सुप्रीम कोर्ट में दो दिन पहले यह यह सनसनीखेज खुलासा हुआ था कि कोविड-19 की महामारी के दौरान डोलो-650 दवाई लिखने के लिए डॉक्टर्स को 1 हजार करोड़ रूपए के उपहार स्वरूप दिए गए। पर शनिवार को

- **डोलो दवा कम्पनी ने सुप्रीम कोर्ट में इस आरोप को नकार दिया कि, उसने डोलो-650 प्रिस्क्राइब करने के लिए डॉक्टरों को 1000 करोड़ रू. की फ्रीबीज़ दी थी।**

इस दवा के निर्माताओं ने इस आरोप से साफ को इंकार करते हुए इसे पूर्णतया झूठा और निराधार बताया। डोलो-650 एक एंटीपायरैटिक और बुखार कम करने की दवाई है जिसकी वैश्विक महामारी के दौरान जबर्दस्त डिमांड थी।

(शेष पृष्ठ 5 पर)